Alleged Expulsion of Hindus and Sikhs from Afghanistan

श्री विष्णु कांत शास्त्री (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से अफगानिस्तान से हिन्दुओं और सिखों के निष्कासन और भारत के आगमन जैसी ज्वलंत समस्याओं की ओर देश के विदेश मन्त्रालय और गृह मंत्री का ध्यान आकृष्ट करना चाहता । यह अत्यन्त उद्वेगजनक तथ्य है कि अफगानिस्तान में नई सरकार के गठन के बाद और अफगानिस्तान को इस्लामिक देश घोषित कर देने के बाद वहां मुजाहिदों ने हिन्दुओं और सिखों को जो 50 हजार से अधिक संख्या में वहां रहते हैं, काफिर करार कर दिया है। समाचार पत्रों में प्रकाशित संवादों के अनुसार "सन्डे' और "हिन्दुस्तान टाइम्स" जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में यह बताया गया है कि खुलेआम अफगानिस्तान के अभागे हिंदुओं और सिखों की दुकानें लूट ली जाती हैं, मकानों पर कब्जा कर लिया जाता है, उनकी महिलाओं का शील भंग करने का दुस्साहस किया जाता है और जो विरोध करते हैं उनको मौत के घाट उतार दिया जाता है। 50 हजार से अधिक हिन्द और सिख नागरिक मौत की छाया में पीड़ा और वेदना के साथ अपना जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त हैं। यह 50 हजार नागरिक भारत की ओर आशा भरी दृष्टि से देखते हैं। यह बताया गया है कि करीब 6 हजार नागरिक पाकिस्तान होकर भारत आ चुके हैं। किंतु इन अभागे शरणार्थियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है भारत सरकार इनके लिए अपने को उत्तरदायी नहीं मानती । कोई दूसरी संस्था भी पहल करके इनकी देखरेख नहीं कर रही है। जिस तरह से अफगानिस्तान सरकार बार-बार यह कहती है और उसने अभी यह कहा है कि भारत में मुसलमानों के साथ जो व्यवहार किया जाएगा उसके अनुसार ही हमारा रवैया भारत के प्रति होगा, मैं भारत सरकार से यह मांग करता हूं कि हमारी सरकार भी कूटनीतिक दबाव डाले कि अफगानिस्तान में हिंदुओं और सिखों के प्रति अत्याचार बंद हो। जो नागरिक शरणार्थी के रूप में यहां आए हैं वे पाकिस्तान से होकर आए हैं। पाकिस्तान में हिंदुओं और सिखों में भदभाव करने की चेष्टा की जा रही है। "हिंदुस्तान टाइम्स" में प्रचारित संवाद के अनुसार यह स्पष्ट है कि वहां सिखों को बसाने का प्रयास किया गया है और सरदार प्रेम सिंह जैसे देशभक्त सिखों ने कहा कि हमारी जड़ें भारत में हैं पाकिस्तान में नहीं इसलिए व भारत आ गये। जो हमारी सहायता की आशा रखते है उनको सहायता दी जानी चाहिए। मैं यह भी तथ्य आपके सामने पेश करना चाहता हूं कि 80 के दशक में जब वहां कम्युनिस्ट सरकार बनी थी तो भी बहुत से अफगान नागरिक भारतवर्ष में शरणार्थी के रूप में आए थे उस समय जो अफगान नागरिक मुसलमान थे उनको यू0एन0ओ0 ने शरणार्थी के रूप में माना था और जो नागरिक हिंदू थे उनको शरणार्थी नहीं माना गया था। अफगान मुसलमान नागरिकों को यू0एन0ओ0 की तरफ से 14 डालर प्रति परिवार प्रति दिन की सहायता दी जाती थी, मैं अपनी सरकार से मांग करता हूं कि 6 हजार शरणार्थी जो अफगान नागरिक के रूप में यहां आए हैं उन्हें यू0एन0ओ0 की तरफ से उसी प्रकार की सहायता दिलायी जाए एवं उनकी देखरेख की जाए तथा यह चेष्टा की जाए कि अफगानिस्तान में बसे हुए हिंदू और सिखों के ऊपर अत्याचार बंद हो।

Industrial unrest at the Heavy Water Project at Manuguru in Khammam district of Andhra Pradesh

SHRI ASHIS SEN (West Bengal): Mr. Vice-Chairman, the Department of Atomic Energy has got several projects in different parts of the country. The Heavy Water Project is one of the projects which is situated at Manuguru in Khammam district of Andhra Pradesh. I was perturbed to find that about 1250 workers and 400 temporary workers of ths particular project are on strike since 14th July on all-India basis. Why is it so? The employees' association there has been conducting negotiations with the management over a